धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

सितम्बर 2009

* देवात्मा का फरमान

* आत्मबोध की नितांत आवश्यकता

* मनुष्य के लिए सुख अनुराग के पीछे जाकर मिथ्या और अशुभ का अनुरागी बनना आवश्यक है।

* ऐ मनुष्य! तू अपने आत्मा की सुध ले

* क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु

* धर्म एक धन्धा है।

* अभी बहुत कुछ शेष है।

* जोर जबरदस्ती से समस्या हल नहीं होती

देवात्मा का फरमान

नीच घृणा ज़हार कातिल है, यह आत्मा का कुछ बनने नहीं देती। तुम्हारे भीतर बरदाशत करने की इतनी ताकत आनी चाहिए कि तुम दूसरों से बुरा सलूक पाकर भी उससे फट न जाओ बल्कि उसका भी भला करना चाहो। उसके लिए सच्ची हमदर्दी का भाव पैदा हो, तब दूसरे के दिल पर असल होता है और उसमें कुछ बेहतरी का सिलसिला आरम्भ होता है, वरना लफज़ों से दूसरे की जिंदगी में शुभ परिवर्तन का कार्य आरम्भ नहीं होता। हम चाहते हैं कि तुम्हारे भीतर से यह नीच घृणा शक्ति नष्ट हो सके। यह फूंक मार देने या सिर्फ मुंह से कह देने से नष्ट नहीं हो सकती, बल्कि तुम्हें अपने निज के साधन में प्रतिदिन ऐसे लेखों का पाठ करना चाहिए जिनसे उसकी घृणित और महा हानिकारक छवि तुम्हारे सामने आवे। इस विषय में लिखने का साधन भी होना चाहिए।

यूं तो प्रत्येक शारीरिक रोग से शरीर के लिए हानिकारक है, परन्तु दुर्भाग्य से यदि किसी को कोढ़ का महा रोग हो जाए, तो उस अभागे जन की बहुत ही कृपापात्र अवस्था है। यह महा कोढ़ एक एक जन के लिए शारीरिक अंगों पर आक्रमण करके उन्हें गला गला कर झाड़ना आरम्भ करता है। धीरे-धीरे उसके सब अंग गल गल कर झड़ना आरम्भ करते हैं और बहुत वर्षों तक महा भयानक दुःखों में से गुज़र कर वह जन मृत्य को प्राप्त हो जाता है। उसके पास से बड़ी भारी सडांद आती है। कोई जन ऐसे कोढ़ी के पास चन्द मिन्ट खड़ा होना भी गवारा नहीं करता। उसके ताल्लुक में आने वाले जनों को भी इस महा कोढ़ के रोग के लग जाने का अंदेशा होता है। इस महा हानि से औरों को बचाने के निमित्त कई दयालु हृदय रखने वालों ने इस महारोग के रोगी जनों के लिए नाना स्थानों में अलग अस्पताल खोल दिए हैं, जहां पर उनकी बाकायदा गौर से शुश्रूषा की जाती है और अन्य जन महा हानि उठाने से बच जाते हैं।

ठीक इसी प्रकार से ही यूं तो सब नीच अनुराग और घुणाएं आत्मा के लिए हानिकारक हैं परन्तु जो नीच अनुराग कोढ़ का काम करता है, वह अहं का महा हानिकारक रोग है। उससे उत्पन्न घमंड और नीच घृणा सचमुच ही एक एक कोढ़ी की न्याई उसके आत्मिक उच्च अंगों को झुलसने का काम करते रहते हैं। ऐसा अभागा जन औरों के सच्चे या झूठे अवगुणों का औरों के पास प्रकाश करके विष खाने और औरों के भीतर भी विष संचार करने का काम करता रहता है। ऐसे ही एक जन के पत्र को पाकर भगवान देवात्मा ने यह फरमाया :-

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 9

सितम्बर 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्मबोध की नितांत आवश्यकता

बोध किसे कहते हैं

किसी मनुष्य के अन्दर जितने प्रकार की ज्ञान, भाव, शक्तियां वर्तमान होती हैं वह सब ही उसकी बोध शक्तियां कहलाती हैं। जैसे देखने, सुनने आदि की जो ज्ञान शक्तियां मनुष्य में पाई जाती है वह बोध शक्तियां हैं, और किसी मनुष्य में सोच विचार करने, स्मरण रखने, कल्पना आदि करने की जो ज्ञान शक्तियां हैं वह भी बोध शक्तियां हैं, और इसके अतिरिक्त 'मैं' और पर के सम्बन्ध में अलग-अलग ज्ञान और सफाई, तरतीब, सुन्दरता, गाने और बजाने आदि की जो भी कई ज्ञान शक्तियां हैं वह भी सब बोध शक्तियां कहलाती हैं। इस तरह एक-एक इंसान के अन्दर विविध प्रकार के सुख अनुरागों और दुख के प्रति घृणा भाव की जो शक्तियां हैं वह भी सब बोध शक्तियां कहलाती हैं।

एक-एक बोध के न होने या खराब हालत में होने का घाटा

आत्मिक बोध तो सबसे अच्छा श्रेणी का बोध है, और वह एक-एक मनुष्य के लिए सबसे बढ़कर आवश्यक बोध भी है इसलिए जहां उस बोध की वर्तमानता के लाभों का कोई शुमार नहीं वहां उसके अभाव के घाटे की भी कोई सीमा नहीं है इसके अतिरिक्त एक-एक मनुष्य के लिए और भी कई तरह के निम्न दर्जे की बोध शक्तियों के लाभ करने की आवश्यकता है। उनमें से यदि कोई बोध शक्ति किसी जन में वर्तमान न हो या खराब हालत में पाई जाती हो तो उसका घाटा भी बहुत बड़ा घाटा होता है। यदि एक जन आंखों से अन्धा है या उसकी देखने की शक्ति बहुत कमजोर है तो ऐसे जन को अपने प्रतिदिन के जीवन में जिस प्रकार की दिक्कत में से गुजरना पड़ता है और वे कई बरकतों से वंचित रहता है वह जानने वालों से छिपी हुई बात नहीं है। इसलिए कई अन्धे लोग यह पुकारते देखे जाते हैं कि 'आंखों वालो, आंखे बड़ी नेयमत हैं' किसी मनुष्य के लिए आंखों वाला होना बहुत ही बरकत की चीज़ हैं, और उसका आंखों से वंचित होना बहुत बड़े घाटे की बात है। एक-एक अन्धे व्यक्ति के लिए देखने की सारी दुनिया ही लोप हो जाती है। इसी प्रकार विविध

प्रकार की मानसिक शक्तियों की ठीक हालत में होने या न होने का फर्क है। मानसिक विचार से जो मनुष्य पागल होता है उसकी जो बुरी गत होती है वह सब जानते हैं। एक-एक पागल जन का अपना जीवन निहायत कृपापात्र बन जाता है। ऐसा जन अपने सम्बन्धियों व अन्य जनों के लिए भी बहुत बड़ी मुसीबत और घाटे की चीज़ प्रमाणित होने लगता है। जिन लोगों ने कभी पागल खाने में रहने वाले पागलों की हालत को देखने का अवसर पाया है वह अच्छी तरह जानते हैं कि एक-एक पागल जन का जीवन कैसा दुखदायी होता है। इसी तरह एक-एक जन जो धन के बोध से वंचित है या सम्मान के बोध से खाली है वह भी ऐसे बोधों के रखने वाले जनों की तुलना में जैसी हानियां उठाता रहता है और जिस प्रकार के घाटे में रहता है उसका भी बहुत से जनों को अच्छी तरह पता है। इससे ऊपर एक-एक जन जो अपने अन्दर हमदर्दी का बोध रखता है और एक जन जो ऐसा कोई बोध नहीं रखता बल्कि इस बोध के विरुद्ध निर्दयी है। जुल्म करने पर हानि पहुंचाने में आराम मालूम करता है, इन दोनों प्रकार के जनों में एक बहुत बड़ा अन्तर हो जाता है, उसे भी लोग बहुत अच्छी तरह जानते हैं। शरीफ मनुष्य में एक-एक हमदर्द दिल रखने वाले जन की जो महिमा होती है या उसका जो सम्मान होता है वह किसी अत्याचारी का कदापि नहीं होता, और जीवन के सफर में एक-एक हमदर्द जन जो कुछ उच्च बरकतें पाता है वह किसी निर्दयी और अत्याचारी को कहां मिल सकती है? हम लोग मनुष्य जगत को छोड़ कर पशु जगत की हालत को ही अपने सामने लाएं और देखें कि कई प्रकार के उच्च बोधों से खाली और कई तरह की महा हानिकारक शक्तियों से भरपूर एक-एक भेड़िए और शेर का जीवन कैसा भयानक और राक्षसी होता है, और उसकी तुलना में एक-एक बकरी और एक-एक गाय का जीवन कैसी बरकत की चीज़ होता है। इसी तरह इन सब प्रकार के बोधों से ऊपर आत्मिक बोध है। यह बोध किसी मनुष्य में यदि पैदा हो सके और बढ़ सके तो उसके सौभाग्य की कोई सीमा नहीं, और इस बोध से वंचित जो जन हैं उनके अभाग्यपन का भी कोई ठिकाना नहीं।

आत्मिक बोध क्या होता है?

जैसे शारीरिक जीवन में आंखों की वर्तमानता से एक-एक जन सूर्य आदि की रोशनी पाकर बाहर की दुनिया की विविध वस्तुओं के रूप रंग को देखता है और आंखों के द्वारा कई तरह की बरकतें पाता है वैसे ही जिस महा सौभाग्यवान जन में देवआत्मा के देवप्रभावों को पाकर सच्चा आत्मिक बोध पैदा हो जाता है, वो जन उस बोध के पैदा होने पर देवआत्मा की देवज्योति में अपने आत्मा की गठन, उसके रोगों और पतन से मोक्ष और आत्मिक विकास की आवश्यकता और इसकी विधि, मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य आदि के विविध तत्वों को बहुत उज्जवल रूप में देखता है। वह अपनी आत्मिक अवस्था को भी अच्छी तरह अवलोकन करता है और अपने सम्पर्क में आने वाले और जनों की आत्मिक अवस्था के बारे में भी कई तरह की शक्तियों को जानने लगता है और वह आत्मिक जीवन संबंधी सच्चाई को अधिक से अधिक जानने का सच्चा आकांक्षी बन जाता है।'

मानो उसके सामने आत्मिक दुनियां रोज-ए-रौशन की तरह खुल जाती है और वह इस विचार से एक नई श्रेष्ठ दुनिया का नागरिक बन जाता है। फिर वह इस बोध की बिना पर इन तत्वों को भी अच्छी तरह जानने लगता है कि किसी मनुष्य आत्मा में आत्मिक सत्य बोध सबसे उच्च और सबसे आवश्यक बोध है और इसके अतिरिक्त वह अपने सच्चे दिल से अपने आत्मिक मोक्ष और उसके विकास का आकांक्षी बन जाता है। और ऐसी हालत में वह सबसे बढ़कर अपने आत्मा के कल्याण के संग्राम में लग जाता है। आत्मिक बोध की ऐसी अवस्था के बारे में भगवान देवात्मा स्वास्तित्व यज्ञ सम्बन्धी आदेशों में फरमाते हैं-

1) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधनकर्ता के लिए आवश्यकता है कि वह अपने अस्तित्व के बारे में सब प्रकार के आवश्यक ज्ञान के लाभ करने के लिए भलीभांत आकांक्षा अनुभव करे।

2) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधनकर्ता के लिए आवश्यकता है कि वह अन्य प्रत्येक विद्या व अवगति की तुलना में अपने अस्तित्व के विषय में सत्यज्ञान लाभ करने की आवश्यकता और श्रेष्ठता को विशेष रूप से अनुभव करे।

3) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधनकर्ता के लिए आवश्यकता है कि वह अपने-अस्तित्व की रक्षा और उसके विकास के लिए अपने हृदय में भलीभांत आकांक्षा अनुभव करे।

अब हम लोग देखें कि हमारे भीतर आत्मिक बोध के बारे में उपरोक्त प्रकार के निराले लक्षण कहां तक पाए जाते हैं। हम लोगों को यह पूर्ण विश्वास करने की आवश्यकता है कि इस प्रकार के निहायत कीमती बोध जिस दर्जे हमारे भीतर जागृत और उन्नत होंगे उसी दर्जे हम जीवन की अनगिनत बरकतों से मालामाल होते जा सकेंगे और औरों के लिए भी अधिक से अधिक बरकत की चीज बनते जाएंगे। और आत्मिक बरकतों के अतिरिक्त और बातों में भी हमारी बेहतरी और भलाई का अधिक से अधिक रास्ता खुल जाएगा। यदि हम लोग किसी कारण से इस बोध को अपने अन्दर पैदा न कर सकें या यदि कुछ पैदा हो जाए या उसे बिगाड़ने लग जाएं तो हमारे दुर्भाग्य की भी कोई सीमा न रह पाएगी। काश! हम लोग इस सच्चाई को अच्छी तरह देख सकें और सच्चे आत्मबोधी बनकर क्या अपना और क्या दूसरों का अधिक से अधिक भला कर सकें और भगवान देवात्मा की शरण में आने के महा सौभाग्य को भलीभांत सफल कर सकें। (सत्यदेव संवाद, 23 जनवरी, 1940)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

मनुष्य के लिए सुख अनुराग के पीछे जाकर मिथ्या और अशुभ का अनुरागी बनना आवश्यक है।

भगवान देवात्मा इस बारे में फरमाते हैं- किसी प्रकार का सुख लाभ करना मनुष्य का लक्ष्य नहीं है क्योंकि किसी सुख का अनुरागी बनने से प्रत्येक मनुष्य के लिए मिथ्या और अहित कि ओर अनुगमन करना और ऐसे अनुगमन से अपने आत्मा को पतित करना और उसमें अंधकार की उत्पति करना और इस अंधकार के कारण उसके प्रकृत रूप, उसके पतन, उस पतन से मोक्ष, उसके विनाश और विकास आदि विषयों के संबंध में नेचर मूलक विविध सत्यों के देखने के दिनों-दिन अयोग्य बनना और अंत में पूर्ण अयोग्य और अंधा बन जाना अनिवार्य है।

सच है कि किसी प्रकार का भी सुख लाभ करना मनुष्य जीवन का लक्ष्य नहीं है क्योंकि सुख का अनुरागी बनने से मनुष्य के लिए झूठ और अशुभ का अनुरागी बन जाना भी आवश्यक है, जैसा कि करोड़ों मनुष्य इस सच्चाई को अपने जीवन में सच्चा प्रमाणित कर रहे हैं और फिर झूठ और अशुभ का अनुराग आत्मा के लिए जहरे कातिल है। अब जबकि मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही सत्य व सार वस्तु है, इसलिए यदि कोई मनुष्य ऐसी शक्तियों का दास बन जाए जिससे उसका आत्मा रोगी और कोढ़ी बनता हो और धीरे-धीरे महादुख पा-पाकर अकाल मृत्यु का शिकार हो जाता हो, तब उस मनुष्य के लिए ऐसे रास्ते का यात्री बनना और इस प्रकार झूठ और अशुभ के पीछे जाकर अपनी तबाही करना उसकी जिस कदर भयानक बदनसीबी है और उसके लिए जिस कदर घाटे की बात है, उसका अनुमान किया जा सकता है। जैसे किसी मनुष्य की शरीर की रक्षा और भलाई में स्वाद का अनुराग कई तरह से बहुत हानिकारक और अकाल मृत्यु लाने वाला प्रमाणित होता है और उसका प्रमाण करोड़ों लोगों के जीवनों से अच्छी तरह मिल रहा है और वही मनुष्य सचमुच लाभ में रहते हैं कि जो शरीर के संबंध में स्वाद को मुख्य रखकर नहीं चलते बल्कि स्वास्थ्य के नियमों को मुख्य रखकर चलते हैं, क्योंकि ऐसे जन केवल शारीरिक ताकत और आयु के विचार से ही बहुत लाभ नहीं उठाते बल्कि शारीरिक गठन और स्वास्थ्य के विचार से भी बहुत बड़े लाभ में रहते हैं। जो लोग अपने आत्मिक जीवन में एक या दूसरे सुख के अनुराग में नहीं फंसते, बल्कि आत्मिक कल्याण को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हैं, वह निश्चय जहां अपनी आयु और अपनी आत्मिक शक्ति आदि के विचार से बहुत लाभ में रहते हैं, वहां आत्मिक स्वास्थ्य से भी वह बहुत उच्च सुख और आनंद लाभ करते हैं, जो नीच सुख अनुरागी जनों के सपनों में नहीं आ सकते। अब इस सच्चाई का प्रमाण करोड़ों मनुष्यों के जीवनों से इसी दुनिया में अच्छी तरह मिल रहा है। बहुत सी शारीरिक बीमारियों की मुसीबत, आपस के संबंध में भयानक अनमेल, लड़ाई-झगड़े, खून-खराबे, पागलपन और

आत्महत्याएं आदि इस सुख अनुराग का नतीजा है। एक-एक तीतर, कबूतर भेड़ बकरी आदि कई प्रकार के जानवर इन सुखों के भयानक बंधन से बहुत कुछ आज़ाद होने के कारण जैसे सुख शांति के साथ अपना जीवन बसर कर रहे हैं, वह सुख शांति कितने ही नीच अनुरागी करोड़पतियों और राजों महाराजों को कहां प्राप्त है। क्या यह सच नहीं कि एक-एक करोड़पति अपने आंतरिक नीच सुखों के अधीन होने के कारण अपने हाथ से अपनी हत्या करने के लिए मजबूर हो रहा है। एक-एक राजा अपने आंतरिक अनुचित दुख से बेबस होकर कोठे से छलांग मार कर बिना आई मौत मर जाता है। यह सब कुछ तो इस दुनिया की नारकी लीला है। ऐसे नीच अनुरागी जन स्थूल शरीर त्याग करने के पश्चात जिस प्रकार के भयानक नर्क में सड़ते और गलते रहते हैं और कितने-कितने समय तक कई प्रकार के कष्ट भुगत कर आखिरकार बुरी तरह मर जाते हैं। यह नारकीय दृश्य और भी अधिक दुखदाई है। इसलिए यह सच्चाई अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि किसी भी सुख के अनुराग में फंसना मनुष्य की हद दर्जे की बदनसीबी है और किसी मनुष्य का हर प्रकार का लाभ इसी बात में है कि वह अपने आत्मिक कल्याण को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाए और जिस देवात्मा की शरण में आने और जिन-जिन और सहायकारियों की सहायता के पाने से यह लक्ष्य पूरा हो सकता है, उनकी शरण में आए और उनकी सहायता लाभ करे।

फिर जैसे बाहर की आंखों पर पट्टी बांधे रखने और इन आंखों को गहरे अंधेरे में रखने से वह आंखें खराब हो जाती हैं और धीरे-धीरे पूर्णत: अंधी हो जाती हैं, वैसे ही नीच सुख अनुरागी बनने से एक-एक जन आत्मा की और नाना प्रकार की महा हानियों के उठाने के अतिरिक्त एक बड़ी हानि यह उठाता है कि यह आंतरिक आंखों के विचार से पूर्णत: अंधा हो जाता है। बाहर की आंखों की खराबी का तो यह ईलाज भी हो सकता है कि यदि इस दुनिया में किसी की आंखें ठीक न हो तो मरने के बाद सूक्षम शरीर में उनको ठीक आंखें मिल जाएं परन्तु आत्मिक आंखों के विचार से पूर्णत: अंधा हो जाना तो बहुत सी अवस्थाओं में एक-एक जन को इस हालत में पहुंचा देता है कि स्थूल शरीर के छोड़ने के पश्चात भी उसे अंधा ही रहना पड़ता है और उसे सारी आयु अंधेपन की बहुत भयानक मुसीबत में से गुजरना पड़ता है। इसलिए आप सोचें कि जिन नीच शक्तियों की दासता से कोई आत्मा पूर्ण अंधा बन जाता है, वह नीच शक्तियां उसकी कैसी भयानक शत्रु हैं!

अब अगला प्रश्न यह है कि क्या नीच सुखों की दासता से केवल उन्हीं जनों का बुरा हाल होता है कि जिन्हें भगवान देवात्मा की शरण में आने और उनके देवप्रभाव लाभ करने का अवसर नहीं मिलता या देवात्मा की शरण में आने के पश्चात ही कोई जन ऐसे भयानक नतीजे प्राप्त करता है? हां, यदि कोई जन देवात्मा की शरण में आकर भी उनके देवप्रभावों की बेकदरी करे और दिनों-दिन अधिक से अधिक घमंडी, स्वेच्छाचारी, घृणाकारी और स्वार्थी बनता जाए और अपनी ऐसी बुरी अवस्था से वह भगवान देवात्मा के कार्य में बहुत बड़ा प्रतिबंधक प्रमाणित हो तो उसका निश्चय

और दुनियादारों की तुलना में बहुत अधिक बुरा हाल होता है और वह ऐसी बुरी आत्मिक मृत्यु मरता है कि जो मृत्यु अनेक अवस्थाओं में देवआत्मा की शरण में न आने परन्तु अहंअनुराग की दासता से बचे हुए कितने ही मनुष्यों को प्राप्त नहीं होती।

तब पाठकगण! जैसे एक ओर हमें भगवान देवात्मा की शरण में आने के उच्च अधिकार को अपना सबसे बढ़िया अधिकार उपलब्ध करना चाहिए और उनके देवप्रभावों को पाकर सच्चा आत्मिक बोधी बनना चाहिए, वैसे ही दूसरी ओर इस बात से बहुत अधिक डरना चाहिए कि कहीं भगवान देवात्मा का दान पाते-पाते और उन्हीं का कार्य करते-करते हम कहीं स्वेच्छाचारिता, घमंड, घृणा और स्वार्थ के महा नीच भावों में ही बढ़ते न जाएं और ऐसे भयानक पाप के भागी बनकर अपने दृष्टांत और अपने कई प्रकार के बुरे कर्मो से और जनों को तबाह करने का हेतु न होते जाएं। हमारी यह हृदयगत कामना है कि भगवान देवात्मा ने अपनी देवबाणी में जिस दुर्लभ सत्य को प्रगट किया है, हम लोग उसे अधिक से अधिक उज्जवल रूप में उपलब्ध कर सकें और अपने जीवन में अधिक से अधिक लाभ उठा सकें और किसी प्रकार भी इस सच्चाई की बेकदरी करके अपनी महा हानि न करें। नेचर किसी की भी रिआयत नहीं करती। हमने यदि अपने घमंड में आकर उपरोक्त सच्चाई को पांव के तले रौंदा तो हम निश्चय बहुत बुरी तरह पछताएंगे और बहुत बुरी तरह रोते-पीटते अपने जीवन का नाश करेंगे, हां ऐसा नाश कि जिस नाश से बचना और उसके विरुद्ध सच्चा आत्मिक विकास लाभ करना और उसकी अमुल्य बरकतें पाना, हमारे लिए बेहद आवश्यक और महा सौभाग्य की वस्तु हैं।

देव बाणी

"गठन प्राप्त जीवित आत्मा होकर और फिर अपनी निर्माणकारी शक्ति के द्वारा एक गठन प्राप्त जीवित शरीर को बनाकर जो जन एक ओर अपनी इस आत्मिक गठन की आत्मिक रोगों से रक्षा करने और उसे अपने भीतर की जिन-जिन पतनकारी शक्तियों के विनाशकारी प्रभावों से मोक्ष देने की अवश्यकता है, उनसे मोक्ष पाने के योग्य नहीं बनता, वा नहीं बन सकता वा नहीं बनना चाहता, और दूसरी ओर अपनी गठन में विविध प्रकार के उच्च भावों को उत्पन्न करके और नेचर के विविध विभागों के सम्बन्ध में उनके द्वारा सेवाकारी बनकर अपनी निर्माणकारी शक्ति को उन्नत वा उसका विकास करना नहीं चाहता वा उसका विकास नहीं कर सकता, वह नेचर के विकासकारी नियम को अपने अस्तित्व में पूरा नहीं करता, वा नही कर सकता, उसका नेचर के इस अटल नियम के विरुद्ध गति करके एक न एक दिन अपनी आत्मिक गठन को पूर्णता नष्ट कर देना, और अपने अस्तित्व के विचार से पूर्णता नष्ट हो जाना अनिवार्य है। और जब तक उसके इस अस्तित्व का पूर्ण नाश न हो और वह कुछ न कुछ जीवित रहे, तब तक उसके लिए अपने पतनजात एक वा दूसरे प्रकार के शारीरिक कष्टों और कई प्रकार के आत्मिक दुखों को पाना वा भोगना भी अनिवार्य है।

ऐ मनुष्य! तू अपने आत्मा की सुध ले

जो मनुष्य अपने आर्थिक हालात का ख्याल नहीं रखता और अपने शारीरिक अनुचित सुखों और मानबड़ाई के पीछे जाकर अंधाधुंध अपना धन खर्च करता रहता है और अपनी असली पूंजी और आमदनी से बढ़कर कर्जा लेकर भी खाने-पीने, नए-नए मकान बनाने, अपने बेटे-बेटी के विवाह पर फजूल रुपया बर्बाद करने, घोड़े गाड़ी खरीदने आदि पर बहुत सा रुपया बर्बाद कर देता है या जुआ खेलने आदि पर खूब रुपए उजाड़ता रहता है और उसे जब तक कर्जा मिलता रहता है, तब तक वह इस ओर कुछ ध्यान नहीं देता कि अंधाधुंध कर्जा बढ़ाने का आखिरी नतीजा क्या होगा, वह कर्जे के रुपए को भी अपनी पूंजी या अपनी आमदनी ही समझता है। अब ऐसे जनों का थोड़े दिनों के बाद ही दीवालिया बन जाना एक आवश्यक बात है। हमें बहुत से जनों का निजी अनुभव है कि उन्होंने उचित समय पर अपने आर्थिक हालत को ठीक रखने की ओर कोई उचित ध्यान नहीं दिया और वह अंधाधुंध अपने जिम्मे कर्जा बढ़ाते रहे, आखिरकार जब उन्हें कर्जा मिलता बन्द हो गया और कर्जा देने वालों पर उस जन की आर्थिक खराब अवस्था का भेद खुल गया और उन्होंने अपने रुपयों की वापसी का खूब तकाजा करना आरंभ किया, तब उसे यह होश आई कि मैं अपनी आर्थिक अवस्था के विचार से जो धनी बना हुआ था, वह मेरा केवल वहम था। उसकी बनी बनाई इज्जत सब खाक में मिल गई। उसके घोड़े गाड़ियां सब बिक गए। उसका मकान भी उसके हाथ से निकल गया। हां, ऐसे लोगों में से एक-एक जन ऐसी मुसीबत में फंस गया कि उसे न दिन को चैन आता है और न रात को आराम मिलता है। उसके दिल में मानो एक आग सी लगी रहती है। इस अवस्था में उसका यह ब्यान होता है कि मानो वह सारी-सारी रात तारे गिन-गिनकर काटता है और उसे कहीं किसी तरह आराम नहीं मिलता। उसका कोई जन अब कुछ भी एतबार नहीं करता। वह अपनी साधारण आवश्यकताएं पूरी करने से भी लाचार हो जाता है। उसकी संतान यतीमों की तरह बन जाती है। वह इतना दुखी हो जाता है कि वह उस दुख से छुटकारा पाने के लिए जहर का प्याला पीकर अपना अंत कर लेता है। उसे यह कुछ बोध नहीं होता कि उसके अन्दर जो आग लगी हुई है, वह उसके शरीर की आग नहीं बल्कि आत्मा की आग है और वह आग ऐसी है कि जो उसके स्थूल शरीर की मृत्यु हो जाने से भी किसी तरह न बुझेगी बल्कि कई अवस्थाओं में स्थूल शरीर की मृत्यु के पश्चात वह और अधिक भड़केगी और पता नहीं उसे और कितना लम्बा समय जलाती रहेगी। ओह! एक-एक नीच इच्छा का गुलाम बन जाना एक-एक मनुष्य की कितनी भयानक बदनसीबी है। यही वह भयानक बदनसीबी है कि जिसमें इस समय प्राय: सारी मानवता बुरी तरह फंसी हुई है। घर-घर नर्क की आग जल रही है। एक-एक नगर और एक-एक शहर में खूब दंगे फसाद हो रहे हैं और मनुष्य-मनुष्य के हाथों रो रहा है। एक दूसरे का कुछ एतबार नहीं करता और एक-एक जन दूसरे पर खूब अत्याचार कर रहा है। इस

अवस्था में केवल साधारण मनुष्य ही फंसे हुए नहीं हैं बल्कि एक-एक सभ्य कहलाने वाली सारी कौम दूसरी कौम की दुश्मन बनी हुई है। एक-एक बादशाह का खून पी रहा है, मानो सारी दुनिया खून के आंसू बहा रही है। अब प्रश्न यह है कि यह सारी भयानक लीला क्यों है? क्या इसलिए कि दुनिया में खाने-पीने के सामानों की कुछ कमी है या मकानों की कमी है या विद्या की कमी है या धन दौलत की कमी है और हकूमत की कमी है? कदापि नहीं, कदापि नहीं। इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य अपने असल अस्तित्व अर्थात आत्मा की ओर से पूर्णत: बेहोश है। वह उसकी वर्तमानता का कोई सच्चा ज्ञान नहीं रखता। वह उसके बनने और बिगड़ने की ओर से पूर्णत: गाफिल है। वह केवल यही नहीं कि अपने भले की कोई इच्छा नहीं रखता बल्कि अपनी विविध प्रकार की नीच इच्छाओं का बंधुआ होकर ऐसा उल्टा दृष्टा बन चुका है कि अपनी तबाही में अपनी भलाई देखता है। अपने सच्चे हितकारियों को अपना दुश्मन बोध करता है और अपने दुश्मनों को अपना हितकारी समझता है। ऐसी हालत में रहकर वह रात दिन अपने कर्मो को रोता रहता है। ऐसा जन बेशक देखने में कुछ समय के लिए मौज बहार करता हुआ नज़र आता है, परन्तु वास्तव में वह अपने लिए दुख बढ़ा रहा है और उसके लिए आखिरकार वह समय आ जाता है जबकि उसका जीवन महा रोगी बनकर विविध प्रकार के दुखों का घर बन जाता है। वह न केवल इस दुनिया में कई प्रकार की मुसीबतों और उलझनों में ग्रस्त हो जाता है, बल्कि इस दुनिया को छोड़ने के पश्चात और भी अधिक दुर्गति को प्राप्त होता है। वह एक ओर बहुत नीच आत्माओं में रहने को मजबूर होता है कि जो बुरी तरह उसकी जान के लागू बने रहते हैं। दूसरी ओर वह अपनी नीच इच्छाओं की तृप्ति के सामान न पाकर या इन इच्छाओं के पूरा करने की योग्यता न रखकर ऐसा जलता कुढ़ता है कि जिसकी कोई सीमा नहीं है।

तब हे मनुष्य, तेरे लिए यह कितना आवश्यक है कि तू समय रहते-रहते अपने असल अस्तित्व अर्थात् आत्मा की सच्ची रक्षा करने और उसे बेहतर से बेहतर बनाने का यत्न कर। ऐसा करने से तू हर प्रकार से लाभ में रहेगा। तू इस वहम में मत रह कि अभी बहुत समय पड़ा है, आत्मा की फिर सोझी ले ली जाएगी। ऐसा कदापि नहीं है। जो समय गुजरता जा रहा है, वह तुझे आत्मिक कल्याण से अधिक से अधिक अयोग्य बना रहा है और तेरे लिए वह समय आने वाला है जबकि तू अपने भले के पूर्णत: अयोग्य बन जाएगा और तेरे लिए केवल रोने-पीटने और तबाह होने का ही रास्ता बाकी रह जाएगा। तेरा धन तेरे कुछ काम न आएगा। तेरे नीच संबंधी तुझसे सब बिछड़ जाएंगे। तेरा शरीर तुझसे अलग हो जाएगा। तू हर प्रकार से महा कृपापात्र अवस्था को पहुंच जाएगा। इसलिए नितांत आवश्यक है कि तू समय रहते-रहते संभल। नेचर जो धीरे-धीरे विकास की ओर बढ़ रही है और जिसका मुख्य उद्देश्य यही है, उसने अंधकार और विनाश की शक्तियों से घिरे हुए परन्तु कुछ न कुछ अधिकारी अवस्था रखने वाले जनों के परम कल्याण साधन के लिए आखिरकार इस जगत में सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा को प्रगट किया है कि जिनके प्रगट होने के मुख्य उद्देश्य अधिकारी जनों को आत्मबोधी बनाना और उन्हें आत्मिक कल्याण के मार्ग पर डालना है। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने

देवसमाज की स्थापना की है और उस देवसमाज में भी एक अद्वितीय संस्था स्थापन की है कि जिसका नाम देवसमाज धर्म विकासालय है। एक मात्र यही संस्था है कि जिसमें अधिकारी जन प्रवेश होकर अपने आत्मा का सच्चा बोध पाते और पा सकते हैं। अपने आत्मा के कल्याण की आकांक्षा और सामर्थ्य लाभ करते और कर सकते हैं। ऐसा अमूल्य लाभ प्राप्त करके वह विशेष रूप से धन्य-धन्य और कृतार्थ हो सकते हैं। तू ने यदि अब तक ऐसी अमूल्य संस्था में पहुंचकर अपने आत्मा की सोझी नहीं ली है, तो अब शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए। तू जैसे बाहर की एक-एक डिग्री की बहुत बड़ी कीमत बोध करता है, वैसे ही उसकी तुलना में इस अनोखी संस्था की महिमा महसूस करनी चाहिए और उसमें प्रवेश करके तुझे जिस प्रकार की डिग्री प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है वह अवसर पूर्णत: अनोखा है। और तेरी जो डिग्री सबसे बढ़िया डिग्री होगी, उसकी तुलना में और कोई बड़ी से बड़ी विद्या की डिग्री भी कुछ मूल्य नहीं रखती। तुझे यह मालूम होना चाहिए कि अब कितने ही अधिकारी जन उसमें पहुंच कर लाभ उठा रहे हैं। तू भी उसमें पहुंच कर अपना कल्याण साधन कर और ऐसे सबसे बढ़िया और महा पुण्य के काम में अपने तन-मन-धन से सहायक बन। इससे बढ़कर तेरे जीवन और उसकी शक्तियों की बेहतरीन सफलता और कुछ नहीं हो सकती।

सत्यदेव संवाद 30 जुलाई 1940

देश के लिए भारी क्षति

अत्यन्त शोक कि आन्ध्रा प्रदेश के अति सुयोग्य और महान मुख्य मंत्री माननीय श्री डॉ. वाई. एस. राजशेखर रैडी का 2 सितम्बर 2009 को 60 वर्ष की आयु में, उनके हैलीकॉपटर के अत्यन्त खराब मौसम में दुर्घटना ग्रस्त हो जाने से निधन हो गया। हैलीकॉप्टर में उनके साथ 4 और व्यक्ति भी सदा की नींद सो गए। वह एक महान और सुयोग्य कांग्रेसी और राजनेता थे। वह 34 वर्ष की उमर में डाक्टर और सर्जन होकर भी प्रदेश के कांग्रेस प्रधान सन 1983 में स्वर्गीय श्रीमति इन्द्रागांधी के नेतृत्व में बन गए थे। उन्होंने आन्ध्रा प्रदेश में अपनी सराहनीय कार्यशीलता से अपना विशेष स्थान बना लिया था। ऐसे सुयोग्य और देश हितैषी व्यक्ति का इस प्रकार छोटी उमर में बिछड़ जाना सारे देश के लिए बहुत बड़ा घाटा है। हम उनकी धर्म पत्नी और बेटे और परिवारिक जनों के साथ गहरी सहानुभूति प्रगट करते हैं। उनकी आत्मा की रक्षा वा शान्ति की कामना करते हैं। ऐसा नेता अब आन्ध्रा प्रदेश में और कोई नहीं।

मंत्री, देव धर्म

क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु

क्रोध वा गुस्सा मनुष्य के ऐसे भयानक शत्रु हैं कि उसकी मति तो भृष्ट करते ही हैं, उसको महा हानि पहुंचाते हैं, तबाह कर देते हैं। पिछले दिनों टी. वी. पर रामायण का सीरियल आ रहा था, उसमें मिथ्या का जो रूप पेश किया गया, वह आधुनिक युग में अन्ध विश्वासियों के बिना, कोई और स्वीकार नहीं कर सकता यह उसका नकारात्मिक पहलु है। परन्तु सद्गुणों और र्दुगुणों की यह एक अद्भुत गाथा है।

यहां रामचन्द्र जी का एक आर्दश और सौम्य रूप श्रद्धा का पात्र बन जाता है, वहां रावण के क्रोध का परिणाम सारा इतिहास बदल देता है। कल्पना की गई है कि रावण के 10 सिर थे, वास्तव में वह इतना बुद्धिमान और ज्ञानी था कि उसके भीतर 10 मस्तिष्कों की योग्यता थी, उसे भी इस रूप में कल्पना की गई है। परन्तु उसके क्रोध ने उसकी सोने की लंका को राख का ढेर बना दिया।

जब शूर्पनशा ने अपने ही गल्त व्यवहार से लक्ष्मण को उत्तेजित किया और उन्होंने उसका नाक काट दिया, परन्तु उसने जाकर रावण जो उसका बड़ा भाई था, उसे खूब भड़काया और गुस्से में आकर उसने वह निकृष्ट काम किया कि सतीव्रता सीता का हरण कर लिया। क्रोध में उसने यह पूछना भी गवारा नहीं किया कि शुर्पनखा वहां क्यों गई? उसने तो कोई गल्त काम नहीं किया। रावण की पत्नी ने बहुत समझाने की कोशिश की कि तुम्हारी बहन गुस्से को भड़का कर लंका की तबाही को निमन्त्रण दे रही है, परन्तु क्रोध मनुष्य को इस कदर पागल कर देता है कि उसे न अपनी और न परिवार की भलाई नज़र आने देता है।

रावण इतना बुद्धिमान था, परन्तु वह अपने इस क्रोध को न देख सका और न उससे बच सका, इसके कारण लंका की भयानक तबाही को उसने जन्म दिया।

क्रोध मनुष्य को तनाव में रखता है, सबसे बड़ी हानि उसकी अपनी होती है। क्रोधी मनुष्य माचिस की तीली की तरह है, थोड़ी सी रगड़ से वह आग बरसा देती है, इसी प्रकार छोटी सी बात जो मनुष्य के स्वभाव, उसकी इच्छा, उसकी रुचि, उसके विश्वास, सुख सम्मान उसके मत उसकी आशा के विरुद्ध होती है, तो वह क्रोध में लाल पीला हो जाता है, इस हालत में कोई सही उपाय ढूंढने की अपेक्षा वह हालातों को और उलझा लेता है।

समस्याएं हमारे जीवन का अवश्यक भाग है हम मुर्दा तो हैं नहीं, और इस परिस्थिति में वह यह देखने के अयोग्य हो जाता है कि मेरी कोई रुचि वा इच्छा इत्यादि भी दोषपूर्ण हो सकती है।

मुर्दा मनुष्य के लिए कोई समस्या नहीं, हम जिन्दा मुर्दा तो नहीं बन सकते, परन्तु मुश्किलों में अपना धैर्य बनाए रखना, अपनी प्रकृति के विरुद्ध व्यवहार पाकर भी शान्त रहने का यत्न करना ही मनुष्य को तनाव रहित बना सकता है। क्रोध करने वाला मनुष्य हमेशा तनाव में रहता है। कहते हैं कि 10 मिन्ट गुस्सा होते हो तो आप 600 मिन्ट की खुशी खो देते हो।

क्रोध हमारी परिवारिक खुशियों का भी

प्रबलतम शत्रु है। क्रोधी मनुष्य को हर कोई घृणा करता है, उससे बचना चाहता है। वह धीरे-धीरे अकेला पड़ जाता है। क्रोध में बोले शब्द दूसरों के दिलों में नश्तर चुभो देते हैं और कभी न भरने वाले ज़ख्म दे जाते हैं।

क्रोध के साथ अंहकार की भावना भी आती है। वास्तव में क्रोध अंहकार की उपज है। हम अपने से धन दौलत, रुतबे, शारीरिक बल किसी पक्ष में छोटे और निर्बल और कमज़ोर व्यक्ति पर झट से क्रोध करते हैं, अपशब्द बोलते हैं, क्योंकि वह प्रतिक्रिया करने के योग्य नहीं होता, अपने से रुतबे वा पद से बड़े के आगे हमारा यह व्यवहार नहीं होता, यही कारण है कि स्त्रियों और बच्चों पर पुरुषों के क्रोध के बाण जल्दी चलते हैं और परिवार की सुख शान्ति भंग होती रहती है। जिन बच्चों को जान से प्यारे समझते हैं, वह माता पिता के क्रोध के डर से दुबके रहते हैं। पत्नी का व्यक्तित्व सिमट कर रह जाता है। परिवार तो क्या बड़े-बड़े राज्य नष्ट हो जाते हैं।

बाप बेटे का सम्बन्ध अधिकतर इससे बिगड़ता है। जब बेटा छोटा होता है, तो वह सहन करता है, वह तो विरासत में वही क्रोध लेकर जन्मा होता है, वो बड़ा होकर बाप से टकराता है, इस प्रकार क्रोध हर रिश्ते को दुखदाई बना देता है। इससे दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को जो ठेस पहुंचती है। उसका प्रभाव जल्दी नहीं मिटता, इसीलिए घरों में नरक है।

अहंकार वा क्रोध को देखना और उसे घटाना सबसे कठिन काम है, क्योंकि न तो यह शारीरिक रोग है, जो कोई डाक्टर ठीक कर देगा और न ही यह मान्सिक रोग है, जो कोई विद्वान दूर कर सके, यह अध्यात्मिक रोग है जो हमें विरासत में मिलता है, उसको देखने, समझने वा दूर करने के लिए अध्यात्मिक रोशनी की ही आवश्यकता है। जहां जहां पर सात्विक प्रकृति है, वह प्रयत्न करते हैं और दूसरों को समझाने का भी प्रयत्न करते हैं, कुछ न कुछ सफलता भी मिलती है। मैंने एक पिता का प्रयत्न एक बेटे को समझाने के लिए पढ़ा था। उसका बेटा बहुत गुस्सैल था और हर समय घर में नर्क पैदा करता था। बेटे को समझाने का हर सम्भव प्रयास असफल होता था, तो एक दिन बाप ने उसको प्यार से समझाया कि बेटा एक बात मानो कि जब तुम्हे गुस्सा आए तो एक बहुत ही सुन्दर मेज़ पर एक कील ठोक दो। पहले ही दिन बेटे ने मेज़ पर 28 कीलें ठोक दी। अपनी बहादुरी अपने बाप को भी बताई। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, कीलों की गिणती कम होती गई। एक दिन ऐसा आया कि उसने एक भी कील नहीं ठोकी। पिता को बताया, तो पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, फिर बाप ने कहा कि बेटा जिस दिन गुस्सा न आए एक दिन कील निकाल दो। बेटे ने धीरे-धीरे करके सारी कीलें निकाल दी। बाप ने दिखाया कि बेटा देखो टेबल कितना भद्दा लगने लगा है, टेबल पर निशान पड़ गए हैं, इसी प्रकार क्रोध से की गई बातों के गहरे निशान छूट जाते हैं। बाद में तुम जितना मर्जी पश्चाताप करो, दर्द उभर-उभर कर आता है। उसका अर्थ है कि क्रोध में कही गई बातों से भावनाओं पर लगा ज़ख्म पश्चाताप की मलहम से पूरा नहीं मिटाया जा सकता, बल्कि वह समय समय पर हरा हो जाता है, जैसे मेज़ को पहले जैसी

खूबसूरत हालत में नहीं लाया जा सकता और टूटे हुए शीशे को पूरा जोड़ा नहीं जा सकता।

एक सात्विक प्रकृति वाला जन ऐसी सोच रख सकता है। अध्यात्मिक रोशनी इससे आगे ले जाती है, वह हमें दिखाती है कि अहंकार से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

यह अध्यात्मिक रोशनी परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव शक्तियों में विकसित हुई है। यह अलौकिक ज्योति जब किसी अधिकारी आत्मा में प्रवेश करती है, तो उसे उसके अहंकार वा उससे उत्पन्न उसके क्रोध वा गुस्से भरे व्यवहारों को दिखाती है। एक-एक पति जो अपने अहंकार में अन्धा होकर और गुस्से से भरकर अपनी पत्नी को अपशब्द बोलता था और इससे भी आगे उस पर हाथ उठाने गलियां देने का घिनौना काम करता था, उसे वह अपना राक्षसी रूप नज़र आने लगता है और वह अहंकारी अपनी पत्नी के पैरों पर सिर रखकर क्षमा मांगने के लिए मजबूर हो जाता है और आगे से ऐसा न करने के संग्राम में पड़ जाता है।

एक-एक बेटा गुस्से से पागल होकर अपनी जन्मदाता माता को यहां तक अपशब्द बोलता है कि "मैं रांड का पत्थर मारकर सिर फोड़ दूंगा, परन्तु सौभाग्य से उसे ऐसी अध्यात्मिक ज्योति को पाने का सौभाग्य मिल जाता है, तो न केवल उसकी गन्दी जुबान पर ही ब्रेक लग जाती है, बल्कि वह मां का ऐसा सेवाकारी पुत्र बन गया कि माता की आखरी बिमारी में इतनी सेवा की, मां की गन्दगी तक अपने हाथों से उठाई और यह सर्टीफिकेट देने के लिए माता मज़बूर हो गई कि "बेटा, तुमने तो मेरे पेट पड़े का बदला उतार दिया।"

एक-एक मां अपने बेटे के अहंकार वा गुस्से भरे व्यवहारों से तंग आकर यह कहती है कि "या मैं मर जाऊं या तू मर जाए, हम दोनों का गुजारा नहीं हो सकता" वही बेटा ऐसी नादर अध्यात्मिक रोशनी में अपने अहंकारी वा क्रोधी रूप को देखता है और माता की सेवा करके, उनके कपड़े धोकर, उनके बर्तन साफ करके सच्ची तृप्ति पाता है। जब तक अपना अहंकार नज़र नहीं आता, तब तक उसको दूर करने को संग्राम भी नहीं हो सकता। यह एक निरन्तर संग्राम की चीज़ है।

सरुजीत बराड़

महोत्सव-मुबारक

पाठक जानकर खुशी महसूस करेंगे कि इस वर्ष परम पूजनीय भगवान देवात्मा की 159 वां शुभ जन्म महोत्सव 1 दिसम्बर से 4 दिसम्बर 2009 तक मनाया जा रहा है।

धर्म एक धन्धा है।

अंध भक्तों के इस देश में अगर कोई सब से चोखा धंधा है तो वह है धर्म का धन्धा। धर्म के नाम पर चाहे जो बेच दो, सब बिकेगा। तभी तो सदियों से चली आ रही धर्म की दुकानें दिनों दिन और ज्यादा मुनाफा देने वाली बनती जा रही है।

देश में एक से बढ़ कर एक शानदार मन्दिर हैं और आए दिन शहरों में और भी सुंदर मन्दिर बन रहे हैं तो इस के पीछे शुद्ध व्यावसायिक सोच है। धर्म के प्रतीक इन शानदार मन्दिरों के बाहर भूखेनंगों की लंबी कतारें देश की बदहाली की दास्तान कहती हैं।

मन्दिरों के जायदाद पर अगर नजर डाली जाए तो पता चलता है कि दान में कितना दम है। इस में कोई शक नहीं कि मन्दिरों के पास जमा दौलत भक्तों की मेहनत की गाढ़ी कमाई है जिसे पुजारियों ने भगवान के नाम पर भक्तों से ठगा है।

एक बार अगर कोई भक्त मन्दिर में जा कर पूजा आरती का एक चक्कर पूरा कर ले तो उस की जेब का वजन खासा कम हो जाता है।

महंगी आरती

आमतौर पर मन्दिरों में पूजा की थाली 11 रुपए से शुरू हो कर 101 रुपए तक जाती है, लेकिन कुछ खास मन्दिरों में यही थाली 151, 251, 501, 1001, 1101 रुपए की हो जाती है।

इस के बाद आरती की थाली में दक्षिण के लिए 51 रुपए, नहीं तो कम से कम 11 रुपए डालना जरूरी हो जाता है क्योंकि ऐसा न करने पर पुजारी नाराज हो सकता है। लाजिमी है कि कोई अंध भक्त उस की नाराजगी तो चाहेगा नहीं।

मंदिरों के बाहर भिखारियों की लंबी कतारें लगी रहती हैं। इसे ऊपर वाले की बेबसी ही कहा जाएगा कि दुनिया के पालनहार व तारनहार मंदिरों के बाहर भिखारियों की भीड़ भीख मांगती नजर आती है। भिखारी भी ऐसे कि 5 रुपए से कम की भीख न मांगें।

भैरवनाथ के मंदिरों में प्रसाद के रूप में शराब चढ़ाई जाती है। मंदिर के बाहर भिखारी अपना गिलास ले कर बैठे रहते हैं और जैसे ही कोई भक्त शराब चढ़ा कर बाहर निकलता है वह उस पर टूट पड़ते हैं। कोई भक्त किसी भिखारी को पैसे देता है तो वह उसे लेने से इनकार कर देता है और शराब की मांग करता है।

मुफ्त नहीं जागरण

धर्म के नाम पर जागरण कराने का खासा रिवाज है। इस में कानफोडू संगीत के साथ मां को चिल्ला कर जगाने और बुलाने की कोशिश की जाती है।

जागरण का धंधा भी बड़ा चोखा है। जागरण मण्डली एक रात जागरण करने के 15 – 20 हजार से 1 लाख रुपए तक लेती है। इन मशहूर गायकों में नरेंद्र चंचल, हंसराज हंस, लखबिंदर सिंह लक्खा व अनूप जलोटा आदि के नाम आते हैं।

जागरण मण्डली को रकम देने के अलावा टेंट, जनरेटर और पूजा के सामान पर अलग से हजारों रुपए खर्च होते हैं। कुछ लोग बाकायदा निमंत्रण कार्ड छपवाकर अपनों को जागरण में आने

का न्योता देते हैं। इस तरह देखें तो कुल मिला कर एक जागरण करवाने में तकरीबन 40 से 60 हजार रुपए का खर्च बैठता है। जाहिर है ये रुपए धर्म के नाम पर ही खर्च किए जाते हैं।

पूजा करो, पैसा गंवाओ

देश के कोने-कोने से अंधभक्त पुण्य कमाने के धार्मिक स्थलों पर जाते हैं। भले ही हम पुण्य में तमाम तरह की तकलीफें झेलनी पड़ें मगर धर्म की पुस्तकें तो यही बताती हैं न कि पुण्यलाभ पाना है तो शरीर को साधो। सैकड़ों हजारों किलोमीटर की यात्रा कर भक्त जब धर्म स्थलों पर पहुंचता है तो वहां शुरू होता है पंडों का असली खेल। वे यहां पहुंचे भक्तों से ज्यादा से ज्यादा माल ऐंठने के चक्कर में रहते हैं। जैसे एक भक्त के साथ प्रयाग में हुआ कि संगम में एक डुबकी लगाने के लिए उसे नाव वाले को 200 रुपए देने पड़े।

एक कुंड

वाराणसी के भदैनी इलाके में एक कुंड है 'लोलार्क कुंड।' धर्म के धंधेबाजों में इस के बारे में अफवाह फैला रखी है कि यहां नहाने से बांझ औरत को भी बच्चा हो सकता है। इस के साथ यह बात भी जोड़ दी गई कि इस कुंड में नहाने के बाद औरत के जिस्म पर जो कपड़े व गहने होंगे, व सब उसे वहीं छोड़ने पड़ेंगे और नए कपड़े पहन कर वहां से जाना होगा।

जाहिर है, इस तरह नहाने से उस औरत का बांझपन दूर हो न हो, लेकिन वहां के पंडों को कपड़े तो कपड़े, जेवर और दक्षिणा में मिले रुपए पैसों का भरपूर फायदा होता है।

समय लगाओ, लाईनों में लगो धर्म के नाम पर

ऊपर वाले को पहले देखने के चक्कर में कितने ही भक्त ऐसे हैं जो सुबह 4 बजे जाकर लाइन लगा लेते हैं ताकि सब से पहले ऊपर वाले को वे ही गुडमार्निंग कहें।

मंदिरों में मूर्ति को देखने के लिए घंटों लाइन में लगना पड़ता है। कई बार औरतें व लड़कियां गरमी व तेज धूम की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़ती हैं। इन लाइनों में इतनी अधिक धक्कामुक्की होती है कि आदमी औरत का फर्क ही खत्म हो जाता है।

मन्दिरों में लगी लाइनों में भक्तों के साथ जेबकतरे भी खड़े होते हैं जो धक्कामुक्की कर रहें लोगों की जेबों पर हाथ साफ करते हैं।

मन्दिरों में जाने और एक मूर्ति को बारबार देखने का लोगों में किस कदर जनून है इस का उदाहरण नई दिल्ली के कनाट प्लेस में बना हनुमान मन्दिर है।

मालामाल हैं दुकानदार

मन्दिरों के आसपास की दुकानें चलाने वाले अच्छाखासा धंधा कर के मोटी कमाई करते हैं।

दिल्ली के हनुमान मन्दिर के पास एनडीएमसी की सरकारी दुकान को एक दुकान ने 5,400 रुपए महीने के किराए पर लिया है। उस के नौकर का कहना है कि इतना किराया वह इसलिए देते हैं कि वहां उसी के हिसाब से धंधा भी तो होता है।

दिल्ली के लोधी रोड के सांईं मन्दिर के पास फूलप्रसाद की दुकान चलाने वाले नीरज का कहना है कि यहां के ज्यादातर दुकानदार 35 से 40 हजार रुपए का कारोबार कर लेते हैं जिस में 8-10 हजार रुपए का मुनाफा हो जाता है जबकि यहां के कुछ बड़े दुकानदार 80-90 हजार रुपए

का कारोबार करते हैं।

सांई मन्दिर के पास फूलप्रसाद कम से कम 10 रुपए मे मिलता है। एक गुलाब के फूल के लिए ग्राहक देख कर 5 से ले कर 25 रुपए तक वसूले जाते हैं।

जगह की नीलामी

मंदिरों के बाहर बैठने वाले भिखारियों की जगह की भी नीलामी होती है। हालांकि इस बारे में कोई भिखारी मुंह नहीं खोलता लेकिन ऐसी खबरें बार-बार आती हैं कि मन्दिरों के आसपास रहने वाले भिखारियों पर माफिया काम करता है जो उन से किसी खास जगह पर बैठ कर भीख मांगने की एवज में रकम वसूलता है। हनुमान मंदिर की 'दुकानदार एसोसिएशन' के एक अधिकारी ने बताया कि यहां पर बैठने वाले भिखारियों से पुलिस 50 रुपए रोजाना लेती है।

दूसरों को बदलने से पहले खुद को बदलो

जीवन का महत्व केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही जीने में नहीं है। दूसरों के विकास का भी ख्याल रखें।

आज देश और समाज में व्याप्त गड़बड़ी, अव्यवस्था और अपराध का मूल कारण क्या है? मानवीय प्रकृति की गरिमा के विरुद्ध लोगों का व्यवहार इसके लिए उत्तरदायी है। आज दी जा रही शिक्षा में मानवीय मूल्यों का कोई समावेश नहीं है। चाहे राजनीतिक क्षेत्र में हो या सामाजिक, आर्थिक या आध्यात्मिक, तुम्हारे सभी कार्य मन की वृत्तियों के अनुसार चल रहे हैं।

मन में बदलाव लाए बिना किसी भी कार्य में बदलाव नहीं लाया जा सकता। कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। जो दूसरों को बदलता है, उसे पहले खुद को ही बदलना होगा। हृदय ताले की तरह है और मन चाबी की तरह। यदि तुम चाबी दायीं तरफ घुमाओगे तो हृदय में मानवीय मूल्यों के द्वार खुलेंगे। यदि कुंजी को बायीं ओर घुमाओगे तो तुम सांसारिक भोगों की ओर प्रवृत्त होंगे।

सभी बुराईयों के लिए दूसरों को ही दोष देना उचित नहीं है। देश या समाज में व्याप्त बुराईयों के लिए हम लोग ही उत्तरदायी है। सरकार अच्छी है या बुरी, यह खुद लोगों पर निर्भर करता है। लोग पूछते हैं कि इस देश से भ्रष्टाचार कब खत्म होगा? भ्रष्टाचार के लिए कौन जिम्मेदार है? सरकार... नहीं। इसके लिए हम और आप ही सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। यदि हर व्यक्ति सत्य के सिद्धांतों पर डटा रहे तो भ्रष्टाचार एक क्षण में खत्म हो जाए। व्यापारियों को अपना व्यवसाय और लाभ सीमित रखना चाहिए और अपने लाभ के एक हिस्से को जन कल्याण में भी लगाना चाहिए। जीवन का महत्व केवल अपने और अपने परिवार केलिए ही जीने में नहीं है। समाज और पूरी दुनिया को अपना परिवार समझो और उसके विकास में योगदान दो।

अभी बहुत कुछ शेष है!

मूल्यहीनता के इस दौर में मनुष्य स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो गया है। यह नहीं कि मूल्य बदले हैं। वे तो शाश्वत हैं। हां, उनको मानने वाले बदल गए हैं। बदलाव मनुष्य की सोच में आया है। मूल्य चेतना कम हुई है। हम मानवता खोते जा रहे हैं। बात विश्वग्राम की करते हैं, पर पड़ोसी तक को नहीं पूछते। स्वार्थी होने पर मनुष्य की संवेदना समाप्त हो जाती है। तब उसमें नैतिक साहस नहीं रहता। ऐसे में वह किसी की सहायता नहीं कर सकता। माना कि बहुत कुछ बदला है, लेकिन सब कुछ समाप्त नहीं हुआ है। यहां, इस धरती पर, ऐसे लोग भी हैं जिनकी मानवीय एवं नैतिक मूल्यों में गहरी आस्था है। यकीन कीजिए, आज भी दुष्टों एवं बेईमानों की तुलना में भले लोगों की संख्या अधिक है। तभी तो यह दुनिया चल रही है। विश्वास बना हुआ है।

अपने कथन के समर्थन में कुछ सत्य घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूं। एक बार निकट के कस्बे से लौट रहा था। पेट्रोल खत्म हो गया और स्कूटर थम गया। मैं उसे घसीटता हुआ चला आ रहा था। पसीने से बुरा हाल था। दुबली देह से स्कूटर खींचना मुश्किल हो रहा था। तभी सूने मार्ग पर एक गुमटी से, जिस पर 'रशीद ऑटो गैरेज' लिखा था, खिचड़ी दाढ़ी वाले एक सज्जन निकलकर आए, पूछा 'क्या गाड़ी खराब हो गई?' मैंने उन्हें हकीकत ब्यान की। उन्होंने पसीने से लथपथ मेरे चेहरे को देखा, फिर नली आदि लाकर पास खड़ी अपनी बाइक से थोड़ा पेट्रोल निकालकर मेरे स्कूटर में डाल दिया, कहा, 'आगे एक डेढ़ किलोमीटर पर पेट्रोल पंप है, तुम वहां तक आसानी से पहुंच जाओगे।' मैंने उन्हें पेट्रोल के पैसे देने चाहे, मगर उन्होंने हंसकर टाल दिया- 'क्या मियां तुम भी....! मैं अभिभूत था। वहां जात-पात, धर्म, ऊंच-नीच कुछ नहीं था। थी तो सिर्फ मनुष्यता। सहायता, वह भी बिना मांगे।'

दूसरे अवसर पर भोपाल से लौटकर, रात बारह बजे के लगभग पैदल ही घर जा रहा था, शार्टकट से। शार्टकट वाली पतली सड़क सुनसान थी। तभी पीछे से स्कूटर पर एक युवक आया और रुककर बोला 'भाई साहब! कहां तक जाना है, मैं छोड़ देता हूं।' मैं डरा। रात का समय, सुनसान सड़क, कहीं पर्स, घड़ी और मोबाइल छीनकर रफू-चक्कर न हो जाए। मैं संकोच में था, पर उसका आमंत्रण इतना आत्मीय था कि पीछे बैठ गया। रास्तेभर कुशंकाओं से घिरा रहा। चूंकि उसे दूसरी ओर जाना था, उसने मुझे घर से कुछ दूर उतार दिया और फुर्र से उड़ गया। 'धन्यवाद' शब्द सुनने को भी नहीं रुका। इस घटना ने सोच की मेरी पूरी श्रृंखला को ही बदलकर रख दिया। इसे पूर्व कोई लिफ्ट मांगता था तो न मैं रुकता था, न किसी को लिफ्ट देता था। मेरे लिए अब यह संभव नहीं रह गया था।

मुंबई से लौटते हुए वडोदरा रुका था, सपरिवार। घर पहुंचा तो देखा चाचाजी के घर ताला लटक रहा है। मालूम हुआ वे शहर से बाहर गए हुए हैं। पड़ोसी मकान मालिक ने मेरा व मेरे परिवार के उदास-निराश चेहरे देखे तो कहा, 'आप हमारे साथ रुक जाएं। शायद एक-दो दिन में आपके चाचाजी लौट आएं। दो दिनों तक उन्होंने हमें प्रेम से रखा और खिलाया-पिलाया ही नहीं, बल्कि घुमाया-फिराया भी। चाचाजी के लौटने पर मालूम हुआ कि मकान-मालिक से उनका विवाद चल रहा है। कई बार 'तू-तू, मैं-मैं' हो चुकी है। बातचीत बंद है। मकान खाली कराने के लिए कोर्ट में मुकदमा चल रहा है। ऐसे में मकान-मालिक की

उदारता और इन्सानियत मुझे छू गई। जब महानगरों में कोई अपने रिश्तेदार को अपने यहां टिकाने या बुलाने को तैयार नहीं होता, तब एक शत्रु के संबंधियों का बाल-बच्चों सहित स्वागत-सत्कार करना और विवाद का आभास तक न होने देना, निश्चित ही श्लाघायोग्य और अनुकरणीय है।

कुछ कथित बुद्धिजीवी, साहित्यकार अपने को जमाने के लिए जोड़-तोड़ उठापटक में लगे रहते हैं। पुस्तक-समीक्षा छपवाना हो या रचना, संपादक को खुश करने में लगे रहते हैं। प्रचार-प्रसार के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाते हैं। साहित्यिक आयोजनों के आयोजकों पर सुख-सुविधा के लिए दबाव डालते हैं। अपने लेखन को जमाने से अधिक चिंता उन्हें स्वयं को जमाने की होती है। ऐसे में कुछ सामान्य से लेखक साहित्यकार ऐसे भी हैं, जिनके सामाजिक जीवन और साहित्यिक जीवन में कोई भेद नहीं है। मेरे एक मित्र की चचेरी बहन एक अर्द्धशासकीय सार्वजनिक संस्थान की प्रमुख बन गई तो अपने चचेरे भाई को उपकृत करने के लिए (भाई-भतीजावाद के तहत) प्रस्ताव रखा कि वह विभागीय पत्रिका में भाई का नाम उप संपादक के रूप में दे देगी और उसके बदले भाई को छह हजार रुपए प्रतिमाह मिलते रहेंगे। जरूरी नहीं कि भाई पत्रिका के लिए कुछ करे। मित्र पढ़ने के शौकीन हैं और कभी-कभार लिखते भी हैं, लेकिन उन्हें बहन का यह सुझाव पसंद नहीं आया। कुछ न करते हुए इस प्रकार का आर्थिक लाभ लेना उन्हें उचित नहीं लगा। लगा, यह एक तरह की अनैतिकता है और सरकारी पैसे का दुरुपयोग। उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। आज जब शाबाश के भूखे लोग नाम, यश और धन के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं, तब सोच की यह ईमानदारी हमें दूर तक सोचने पर विवश करती है। इसी प्रकार एक सुपरिचित कवि एवं आलोचक के समक्ष उनके मित्र ने जो एक साहित्यिक पत्रिका के स्वामी संपादक हैं, उन पर पूरा एक अंक केन्द्रित करने का प्रस्ताव रखा, किंतु कवि महोदय ने यह कहते हुए साफ इनकार कर दिया कि इससे गलत संदेश जाएगा कि मित्र ने मित्र को उपकृत करने के लिए ऐसा किया है। यही नहीं, पत्रिका की प्रतिष्ठा पर भी इससे आंच आएगी। और यह भी कि पत्रिका के लिए अब तक स्वतंत्र रूप से जो कर रहे हैं, उसे भी गलत रूप में देखा जाएगा।

एक मामूली हैसियत के एक स्थानीय रचनाकार को पास के शहर में होने वाले एक साहित्यिक आयोजन का निमंत्रण मिला था। आयोजन में उनकी कोई भूमिका नहीं थी, परन्तु कुछ सुनने-समझने की दृष्टि से वे चले गए। उन्हें देख, लौटते समय आयोजकों ने उन्हें आवागमन व्यय और मानदेय देना चाहा। उन्होंने साफ मना कर दिया, कहा, न तो निमंत्रण पत्र में आने-जाने का खर्च देने का उल्लेख था और न मैंने आयोजन में कोई भागीदारी की। अत: मुझे यह राशि लेने का अधिकार नहीं है। आयोजकों ने काफी आग्रह किया, पर वे राजी नहीं हुए। उनके साथ गए एक अन्य साहित्यकार ने उन्हें धीरे से समझाया कि वे उनका नुकसान क्यों कर रहे हैं, पर वे रचनाकार टस से मस नहीं हुए।

इन तमाम उदाहरणों का आशय यही है कि आज भी सकारात्मक सोच और जीवन मूल्यों में आस्था रखने वाले लोग हैं। उनका आचरण देख उनके प्रति श्रद्धा तो जागृत होती ही है, बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा भी मिलती है। सही गलत के बीच निर्णय करने की सीख भी। सही आचरण से जो सुख-सुकून मिलता है, वह गलत तरीकों से अर्जित भौतिक सुख से अधिक प्रीतिकार है। ऐसी घटनाएं मुझे हर पल अपने अंदर ईमानदारी से झांकने के लिए प्रेरित करती हैं- आत्म विश्लेषण और आत्म समीक्षा के लिए। और आत्म समीक्षा से बेहतर कोई पाठशाला नहीं है।

WPP - Regd. CHD. 0077/09-011 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

जोर जबरदस्ती से समस्या हल नहीं होती

अगर हम विरोधी के प्रति विनम्र और दोस्ताना व्यवहार करें तो संभवत: अपनी बात मनवा सकते हैं।

अगर आप गुस्सा हैं और इस वजह से सामने वाले को दो चार बातें सुना देते हैं तो इससे आपके दिल की भड़ास तो निकल जाएगी, पर आपने कभी सोचा है कि इससे सामने वाले के दिल पर क्या गुजरेगी? क्या सामने वाले को भी उतनी खुशी मिलेगी, जितनी आपको मिली है? क्या आपके गुस्से, आप के शत्रुतापूर्ण रवैये की वजह से वह आपकी बात मान लेगा?

वुडरो विल्सन ने एक बार कहा था, 'अगर आप मेरी तरफ मुक्का ताने हुए आते हैं, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं भी अपना मुक्का तान लूंगा। परन्तु अगर आप शांति से आकर मुझसे यह कहते हैं कि चलिए, हम मिल बैठकर चर्चा करते हैं और अगर हमारे बीच कुछ मतभेद हैं तो यह समझने की कोशिश करते हैं कि किन-किन मुद्दों पर मतभेद हैं, तो इससे संभवत: हमें जल्द ही पता चल जाएगा कि बहुत से मुद्दों पर हमारे विचार समान हैं और हमारे बीच बहुत कम मुद्दों पर मताभिन्नता है। इसके अलावा अगर हममें धैर्य हो, स्पष्टता से भावनाएं व्यक्त करने की इच्छा हो और हम मिल-बैठकर चर्चा करने के लिए तैयार हों, तो अपने मतभेदों को दूर कर लेंगे।'

आपको एक बात समझ लेनी चाहिए कि अगर आपके प्रति किसी मनुष्य के दिल में दुर्भावना और विद्वेष है तो आप तर्कों के सहारे तो उससे अपनी बात नहीं मनवा सकते। डांटने वाले मां-बाप, फटकारने वाले बॉस और पति तथा चिड़चिड़ी पत्नियों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि लोग अपने विचार नहीं बदलना चाहते। शक्ति के प्रयोग द्वारा उन्हें इस बात के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता कि वे आपसे या मुझसे सहमत हो जाएं। परन्तु अगर हम उनके प्रति विनम्र और दोस्ताना व्यवहार करें तो शायद हम उनसे अपनी बात मनवा सकते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts